



वर्ग पुस्तिका - २०२५

अनंत हिंदू
Eternal Hindu

राष्ट्र निर्माण के काम, एक घंटे मंदिर के नाम

श्रेष्ठ समर्पण, मंदिर में समय का अर्पण



आपका काम, मंदिर के नाम

स्वावलंबी मंदिर, स्वावलंबी हम



हमारा मंदिर, हमारी पहचान

शाश्वत हिन्दू, निष्ठावान सनातन मतावलंबियों का एक प्रतिष्ठान है, जिनके मन में सनातन हिंदू धर्म के हित के लिये कुछ न कुछ करने का भाव है, फिर चाहे वो, किसी भी क्षेत्र, संप्रदाय या किसी भी सनातन मतावलंबियों में सक्रिय क्यों न हो। कालक्रम या ऐतिहासिक कारणों से, सनातन हिंदू समाज में प्रविष्ट, जाति, क्षेत्र, भाषा, लिंग आदि की विभाजन और विभेदकारी विकृतियों का संगठन पूर्णतः निषेध करता है।

संकल्प:

- सनातन हिंदू समाज में धर्मबोध और शौर्यबोध के पुनर्जागरण के पराक्रम का संकल्प।
- हिंदू मंदिरों को सामाजिक सक्रियता के केंद्र के रूप में विकसित कर उनको भक्ति और शक्ति केंद्र बनाने का संकल्प।
- भारत, तदनुसार विश्व इतिहास के कालक्रम को सही करना।
- सनातन हिंदू समाज के हर क्षेत्र के प्रतिभाशाली युवक / युवतियों की खोज कर उन्हें प्रोत्साहित करना और राष्ट्र निर्माण के व्यापक अभियान से जोड़ना।
- आधुनिक संचार माध्यमों का व्यापक उपयोग कर, सनातन समाज के गौरवशाली अतीत और अपने पूर्वजों के पराक्रम से नई पीढ़ी का परिचय कराना।

मान्यताएँ और उद्देश्य:

भारत एक प्राचीन राष्ट्र है, अनादिकाल से इसकी भाषा, साहित्य, संस्कृति व सभ्यता विश्व में सर्वश्रेष्ठ रही है। इसकी समृद्धि के कारण एक सहस्र वर्षों से अधिक काल से इसपर आक्रमण होते रहे हैं। भारत इन आक्रांताओं से पराजित भी हुआ और संघर्ष करते हुए स्वाधीन भी हुआ। इस हार-जीत की शृंखला में केंद्र स्थान मंदिर ही रहे। भारत के सर्वाधिक वैभव का काल भी मंदिरों के माध्यम से ही प्राप्त हुआ और आक्रांताओं से लोहा लेने की जब बात आई तो वह भी बड़ी मात्रा में मंदिरों द्वारा और धार्मिक त्योहारों द्वारा उपलब्ध हुआ। निःसंदेह इस जय-पराजय का भारतीय संस्कृति, सभ्यता और जनमानस पर गहरा असर पड़ा जिसके चलते हम सदियों के लिये दासत्व की मानसिकता में चले गए। स्वाधीनता उपरान्त हमें यहीं बताया और जाताया गया कि वेस्ट इंज बेस्ट जिससे हम स्वतंत्र कभी हो ही नहीं सके।

यह एकमात्र सत्य है कि भारत की भूमि, प्रकृति, पर्यावरण, भाषाएँ, संस्कृति, पूर्वज आदि से अपनापन रखनेवाला और प्रेम करनेवाला ही सनातनी है; जो गाय, गंगा और भारत को माँ मानता है, राम जी, कृष्ण जी, बुद्ध जी, महावीर जी एवं नानक जी को अपना पूर्वज मानता है, वह सनातनी है; वही राष्ट्रवादी भी है और सच्चा भारतीय भी।

संस्था, संचालन और परिणाम:

किसी संस्था की स्थापना करना, यदि उसका कोई बृहत् उद्देश्य हो तो, एक रचनात्मक और सकारात्मक परिणाम देता है इसके लिए बहुआयामी प्रयास की आवश्यकता जरूरत होती है। जिस कार्य को करना है, सर्वप्रथम उसकी संकल्पना, यह प्रथम चरण है। कार्य अभी अमूर्त रूप में है, उसकी कार्य पद्धति को सुनिश्चित करना और कार्य सम्पन्न करने के लिये कार्यकर्ताओं को एकत्रित करना, ये अगले चरण हैं। इन सबके दौरान कार्यस्थल की व्यवस्था करना सबसे आवश्यक है।

इन सब से कार्य का बीजारोपण हो जाता है और अंकुरण प्रारम्भ होता है। कार्य से प्रेरित अथवा प्रभावित होकर जितने लोग जुड़ते हैं, उस अनुपात में कार्य का विस्तार स्पष्ट होने लगता है। कार्य संगठन विस्तार में कार्यपद्धति की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कार्यपद्धति की स्पष्टता और पारदर्शिता लोगों के जुड़ने में प्रेरणा का कार्य करते हैं।

जो उत्तम कार्य हम करना चाहते हैं, वैसा करने वाले अन्य विचार और तदनुसार कार्य भी समाज में चल रहे होते हैं। कार्य में हमारे जो सहयोगी होते हैं, परिणाम प्राप्ति में उनकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। देश में अनेकों अच्छी संस्थाएँ बर्नी, चर्ली और एक समय के बाद विलुप्त हो गईं। उन संस्थाओं के उद्देश्य बड़े थे, काम भी उत्तम ढंग से चल रहे थे, समाज कल्याण का कार्य भी यथेष्ट गति से आगे बढ़ रहा था परन्तु अन्ततः जिस लक्ष्य या परिणाम तक पहुँचना था, वहाँ तक नहीं पहुँच पाये। संस्थाओं के संचालन में यही बात सबसे अधिक संज्ञान में रखने की आवश्यकता है।

संगठन का अर्थ

एक ही विचारधारा से प्रेरित, उसीको अपने जीवन का लक्ष्य मानकर उस विचारधारा से उत्पन्न ध्येय की प्राप्ति के लिये कार्य करनेवाले व्यक्तियों के समूह को संगठन कहा जा सकता है।

इस परिभाषा से हमें निम्न कुछ महत्वपूर्ण बिंदु मिलते हैं:

- विचारधारा की समानता
- उस ध्येय की प्राप्ति
- विचारधारा से उत्पन्न लक्ष्य / ध्येय
- व्यक्तियों का समूह

विचारधारा का मूल व्यक्तियों की मान्यतायें ही होती है। मान्यताएँ प्रत्येक व्यक्ति के संस्कारों का प्रतिबिंब है और संस्कार किसी भी जातको अपनी माँ की कोख से मिलना आरम्भ होते हैं।

संस्कार प्राप्त करने की प्रक्रिया एक जीवनकाल में निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह अपने परिवार से, मित्रों से, समाज से, विद्यालय से, आदि जगहों से किन गुणों और अवगुणों को अंगीकृत करता है। एक उत्तम विश्व अर्थात् मानवता के उच्च मूल्यों पर आधारित समाज की स्थापना के लिये इन मूल्यों को स्वीकृत करने वाले मानवों का निर्माण करना प्रत्येक साधु वृत्ति के व्यक्ति का ध्येय होना चाहिये और ये मानवतावादी तत्त्व केवल सनातन में मिलते हैं जहाँ मानव, पशु, तरु, गिरी, सरिता अर्थात् सभी में हम परमेश्वर को देखते हैं और उसकी पूजा एवं भक्ति करते हैं।

इस प्रकार के एक प्रखर विश्व का निर्माण तभी सम्भव होगा जब एक जनसमूह उपरोक्त विचारों को अपना ध्येय बना लेगा और इससे एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करेगा जो कि एक आदर्श राष्ट्र हो। हमारा भारत किसी समय ऐसा ही राष्ट्र था जो विश्व कल्याण की राह पर चलता था जिससे वह विश्वगुरु कहलाता था। विश्व कल्याण की नींव वेदों में है जो अनादि काल से हमारे अर्थात् मानव जाति के पूर्वजों ने अपने अनुभवों से, ज्ञान से संकलित किया है। इसीलिये हम मानते हैं कि मानवधर्म अनादि काल से पृथ्वी पर है और कदाचित् सौर मंडल के अस्तित्व तक यह रहेगा भी। इसीको हमने सनातन कहा है और यही धर्म है।

संगठन की कार्यपद्धति

क्रियाशील संगठन के पाँच अंग होते हैं: कार्यकर्ता, कार्यालय, कार्यक्रम, कार्यकारिणी, कोष

- **कार्यकर्ता:** कार्यकर्ताओं के सामूहिक प्रयासों से संगठन का निर्माण होता है। मंदिर में आने वाले श्रद्धालु संभावित कार्यकर्ता हैं।
- **कार्यालय:** किसी भी संगठन की गतिविधियों को संचालित करने के लिए एक केंद्र की आवश्यकता होती है, उसे ही उस संगठन का कार्यालय कहते हैं। सभी मंदिर हमारे संभावित कार्यालय हैं।
- **कार्यक्रम:** किसी भी संगठन के दो प्रकार के कार्यक्रम होते हैं।
 - नियमित सांगठनिक गतिविधियाँ (Organisational Activities)
 - नैमित्तिक आयोजन (Events)
- **कार्यकारिणी:** कार्य को कार्यान्वित करने वाले व्यक्तियों का समूह
- **कोष:** न्यूनतम साधन में करने की परंपरा और आदत

संगठन एवं लक्ष्य प्राप्ति:

- विश्वसनीय नेतृत्व
- उपयुक्त परिस्थितियाँ
- औजार के रूप में संगठन
- न्यूनतम आर्थिक संसाधन

कार्यपद्धति:

- | | | |
|---------------------|-------------------------------|--|
| • सामूहिकता | • पारदर्शिता | • निर्णय बहुमत नहीं श्रेष्ठता के आधार पर |
| • पारस्परिकता | • अपूर्णांक से पूर्णांक की ओर | • मतभेद संभव, परंतु मनभेद नहीं |
| • मत अनेक निर्णय एक | • प्रसिद्धि से दूरी | • सभी व्यक्ति महत्वपूर्ण, अपरिहार्य कोई नहीं |

कार्यकर्ता:

- | | | |
|--------------------------|---------------------------|---|
| • कार्य करने वाला | • कार्य को आगे बढ़ानेवाला | • कार्य को संरक्षण एवं पोषण देनेवाला |
| • कार्य को दिशा देनेवाला | • कार्य का विकास करनेवाला | • विचार को व्यावहारिक स्वरूप की योजना बनानेवाला |

कार्यकर्ता:

- संगठन के सैद्धांतिक पक्ष को समझना
- संगठन की आवश्यकता अनुसार अपने स्वभाव एवं आदतों में परिवर्तन करना
- स्व से सर्वस्व की ओर
- संगठन के विचार के प्रति कटिबद्धता
- अपने व्यवहार से समाज को प्रेरित करनेवाला
- अपने सहज व्यवहार से सहयोगी कार्यकर्ताओं से मित्रता बनानेवाला
- कथनी और करनी में समानता

- स्वयं के लिए कठोर, दूसरों के लिए क्षमाशील
- सबको साथ लेकर चलने की वृत्ति
- संगठन के कार्य को प्राथमिकता देनेवाला
- आशावादी दृष्टिकोण – हम कर सकते हैं
- सहयोगी की पूरी बात सुननेवाला
- व्यक्तिगत प्रसिद्धि से दर रहनेवाला
- पद, दायित्व श्रेष्ठ नहीं, कार्य ही श्रेष्ठ है
- अनुशासित

कार्यक्रम:

तैयारी एवं समझ कार्यक्रम में ही कार्यकर्ता का निर्माण होता है। इसलिए हर कार्यकर्ता को काम और हर काम के लिए कार्यकर्ता, साथ ही वर्षभर विविधायुक्त कार्यक्रम चलाने से कार्यकर्ताओं में उत्साह रहता है और समाज में संगठन प्रभावी रूप से उभरता है। 4 मुख्य कारक हैं:

- पूर्व योजना
- पूर्ण योजना
- अवलोकन
- अनुवर्तन

संगठनिक गतिविधियाँ:

- **बैठक:** कार्यकर्ताओं की नियमित अंतराल पर कार्य विस्तार की योजना बनाने के लिए और किये कार्य की समीक्षा के लिए एकजुट होना।
- **प्रवास:** संगठन विस्तार के लिए नए लोगों को संगठन से जोड़ने के लिए प्रमुख कार्यकर्ताओं द्वारा विविध स्थानों की यात्रा।
- **प्रशिक्षण:** संगठन के लक्ष्य स्वरूप और कार्यपद्धति के विषय में समझ बनाने के लिए अभ्यास वर्गों का आयोजन।
- **टोली में कार्य (Team Work):** एक समूह के रूप में संगठन के कार्यों को करते समय परस्परपुरक बनाने की मानसिकता का विकास और प्रयोग। उदाहरण - क्रिकेट टीम में अलग अलग खिलाड़ियों की अलग-अलग भूमिका होती है परंतु विजय का लक्ष्य एक होता है।

कार्यालय: कार्य एवं उपयोगिता

- कार्यकर्ताओं के नियमित मिलने का स्थान
- प्रवासी कार्यकर्ताओं के भोजन एवं निवास की व्यवस्था
- संगठन के वस्तुओं को सुरक्षित रखने का स्थान
- संगठन के कार्य की धूरी

संगठन के प्रकल्प: कार्य

- | | |
|--|--|
| <ul style="list-style-type: none"> • भारतीय अर्थव्यवस्था मंदिर पारिस्थिकी सनातन अर्थव्यवस्था मंदिर आर्थिकी | <ul style="list-style-type: none"> • शाश्वत देवालय सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधीयों का केंद्र |
|--|--|

भारतीय अर्थव्यवस्था: मंदिर पारिस्थिकी | सनातन अर्थव्यवस्था | मंदिर आर्थिकी

मंदिर शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार और वाणिज्य, कौशल विकास और वित्तीय सहायता के मुख्य स्रोत थे। हम 1800 ई. के मध्य तक वैश्विक व्यापार में 25% - 35% के बीच योगदान करते थे और 1947 में घटकर 1% से भी कम रह गए। हमारे पास पर्याप्त संकेत हैं कि भारत हमेशा मंदिर-केंद्रित, प्रकृति-केंद्रित, ग्राम-केंद्रित और परिवार-केंद्रित अर्थव्यवस्था रहा है। वर्तमान में, हमारे पास भारत में 5,000 से अधिक बड़े समृद्ध, 2 लाख से अधिक मध्यम समृद्ध और 3 लाख से अधिक छोटे अर्थव्यवस्था वाले राजस्व उत्पन्न करने वाले मंदिर हैं।

सनातन आर्थिकी में मंदिर की भागीदारी सुनिश्चित करना, प्राचीन भारत में, मंदिर शक्तिशाली संस्थान थे और सभी सामाजिक और आर्थिक गतिविधीयों का केंद्रबिंदु थे। मंदिर अध्यात्म और अर्थव्यवस्था के संगम का एकमात्र बिंदु हुआ करते थे। वर्तमान पीढ़ी को भारत के लिए इस विरासत और समय-परीक्षणित मार्ग को समझने और उसका उपयोग करने के लिए उचित अभिव्यक्ति की आवश्यकता है। हमारा मानना है कि सनातन विकास मॉडल और नीति के लिए, यह दृष्टि भारत का आधार सार होने जा रही है। हमारी सनातन अर्थव्यवस्था की नीव सदैव ही “सहयोगिता” रही है, “प्रतियोगिता” नहीं। आज प्रतियोगिता श्राप से हमारा संग्राम है।

सनातन भाव जागृति: शाश्वत देवालय प्रकल्प हेतु पहला कदम

हमारा मानना है कि समाज के हर व्यक्ति में सामुदायिक सेवाओं में योगदान देने की क्षमता है और हम सभी को राष्ट्र निर्माण और मानवता की सेवा में शामिल करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करते हैं। मंदिर को भक्ति केंद्र से शक्ति केंद्र में विकसित करना। आगे आएं और जिम्मेदार सनातनी बनें। इसलिए न केवल भाग लें अपितु एक जागृत और देखभाल करने वाले समाज के लिए 'एक घटे मंदिर के नाम' आंदोलन का केंद्र बनें।

२०२५ तक, हमने ५० से अधिक शहरों में २०० से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए, जैसे मुंबई, ठाणे, कल्याण, नवी मुंबई, कोल्हापुर, पुणे, सोलापुर, लातूर, कोलकाता, कल्याणी, नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, लखनऊ, प्रयागराज, कानपुर, वाराणसी, गोरखपुर, अयोध्या, कुरुक्षेत्र, पानीपत, फरीदाबाद, हिस्सर, हांसी, चंडीगढ़, रायपुर, ऊना, गगरेट, बीजापुर, गोवा, अजमेर, जयपुर, जमशेदपुर, विदिशा, ऊना, पंजवार, तरनतारन, अमृतसर, बटाला, होशियारपुर, जम्मू कुरुआ, सांबा, हीरानगर, लखनपुर, हैदराबाद, सुआंजना...

सनातन भाव जागृति हेतु मूलभूत तैयारी

- शहर और क्रस्बा जहाँ १०० - २०० हिंदू धर्मकार्य करने में रुचि रखते हों और मंदिर हेतु समय में इच्छुक हों।
- आमंत्रण: सॉफ्ट कॉपी डिजाइन / नमूना केंद्रीय कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा।
- बैक ड्रॉप, बैनर और पोस्टर: बैक ड्रॉप सॉफ्ट कॉपी केंद्रीय कार्यालय द्वारा प्रदान की जाएगी।
- आर्थिकी: प्रायोजकों को केंद्रीय कार्यालय की सहमति से स्थानीय स्तर पर अंतिम रूप दिया जा सकता है। अनुमोदन के विषय और प्रायोजकों की अपेक्षा पर स्पष्ट रूप से चर्चा की जानी चाहिए।
- आमंत्रित / अतिथि सूची: जिसमें ३०० से अधिक लोग शामिल हों; डॉक्टर - एलोपैथिक, होम्योपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक के साथ शिक्षक, प्रोफेसर, वकील, वित्तीय सलाहकार, नृत्य शिक्षक, गायक, इंजीनियर, कलाकार, पुजारी, गृहणियां, मंदिर दृस्टी, मंदिर प्रबंधन से जुड़े लोग, करियर काउंसलर, ज्योतिषी, कौशल विकास से जुड़े लोग, संस्कार शिक्षक, योग शिक्षक, सोशल मीडिया कार्यकर्ता, मीडिया और प्रेस, वरिष्ठ नागरिक, उच्च शिक्षित युवा, सेवानिवृत्त लोग और हिंदू मूल के पदाधिकारी और कार्यकर्ता
- समाज विरोधी, आक्रामक स्वभाव वाले तथा राजनीतिक उद्देश्य रखने वाले लोगों को आमंत्रित न करें।
- यात्रा करने वाले व्यक्ति यदि संभव हो तो हार्डकॉपी, ब्रोशर और साहित्य अपने साथ ले जाएंगे।
- मंच या बैक ड्रॉप पर संयुक्त ब्रांडिंग की अनुमति नहीं है (हालांकि मंच के अलावा अनुमति है)
- पीपीटी और डॉक्यूमेंट्री के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले ऑडियो सिस्टम + प्रोजेक्टर / एलईडी स्क्रीन की व्यवस्था।
- प्रेस और मीडिया को आमंत्रित करने की अनुमति है। प्रेस विज्ञप्ति का मूल प्रारूप केंद्रीय कार्यालय द्वारा भेजा जाएगा और अंतिम पैराग्राफ / स्थानीय कार्यक्रम का विवरण स्थानीय टीम द्वारा सलाह के अनुसार जोड़ा जाएगा।
- स्टेज / डायस की ऊंचाई जमीन से १ फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- केंद्रीय कार्यालय से अनुमोदन के अधीन, स्टेज पर अधिकतम ५ लोगों को अनुमति दी जानी चाहिए।

शाश्वत देवालय: सामाजिक गतिविधियों का केंद्र

शाश्वत देवालय हमारा प्रमुख प्रकल्प है जिसके माध्यम से हम मंदिर को सामाजिक गतिविधियों का केन्द्रस्थान बनाने का प्रयास करते हैं। मंदिर से ही धर्मसत्ता, समाजसत्ता, राजसत्ता और अर्थसत्ता चलती रही है। इसी को इस्लामी आक्रमणों के एवं अंग्रेजों के कालखण्ड में ध्वस्त किया गया और तत्पश्चात जो तथाकथित सेकुलर सरकारें आई उन्होंने तो इसे हमारी वर्तमान पीढ़ी को पूरी तरह दिग्भ्रमित कर दिया। शाश्वत हिंदू ने एक पहल शुरू की है जिसका उद्देश्य मंदिरों को हमारी सामाजिक गतिविधियों और कल्याण के "नोडल पॉइंट" (केंद्र) के रूप में जोड़ना, सशक्त बनाना और समन्वय करना है। इसके लिए मानवता के लिए व्यवसायियों को सम्मिलित किया जारहा है और दूसरी ओर समर्थवान मंदिरों से आगे आने की अपील की जा रही है। हमें मंदिरों को केवल भक्ति केंद्र से बदलकर शक्ति केंद्र बनाना होगा - "राष्ट्र निर्माण के काम, एक घंटा मंदिर के नाम", जिसका मुख्य उद्देश्य सभी को शरीर, मन और आत्मा के लाभ वाली सामुदायिक सेवायें प्रदान करना है और उन्हें केवल भक्ति केंद्र से शक्ति केंद्र बनाना है।

राष्ट्र निर्माण के काम, एक धंटा मंदिर के नामः क्या और कैसे?

समयदान मंदिर की गतिविधियाँ चलाता है... सेवा, शिक्षा, संस्कार से स्वरोजगारः

- **सेवा:** आयुर्वेद, होम्योपैथ, नेचुरोपैथ, एलोपैथ, योग, कानूनी, कैरियर परामर्श, बाल परामर्श, ज्योतिष, वित्त, नगर सेवक, ग्राम प्रधान
- **शिक्षा:** सहायक शिक्षा, शिक्षण, शंका समाधान काउंटर, भारतीय कला, शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य, चित्रकारी, ड्राइंग, ज्ञान परम्परा, बागवानी, आत्मरक्षा प्रशिक्षण, शास्त्र ज्ञान, घर / सोरोई चिकित्सा
- **संस्कारः** राष्ट्र गाथा, मूल्य शिक्षा, नैतिक शिक्षा, संस्कार - बच्चों, लड़कियों, युवाओं, छात्रों, घेरलू नौकरानी और घेरलू सहायक संस्कार
- **स्वरोजगारः** कौशल विकास गतिविधियाँ - सिलाई, साबुन बनाना, कलाकृतियाँ, कैरियर परामर्श, व्यवसाय सलाह आदि

उत्सव का आनंद, मंदिर के संगः क्या और कैसे?

- व्यक्तिगत उत्सव आईए मंदिर में जन्मदिन, विवाह, विवाह की वर्षगांठ आदि सभी व्यक्तिगत और पारिवारिक समारोह मनाने का संकल्प लें
- **राष्ट्र उत्सवः** 15 अगस्त, 26 जनवरी इत्यादि
- **सामुदायिक सेवा और उत्सव समारोहः** देवालय की सफाई, वृक्षारोपण, सहभोज, प्रतियोगिता, सम्मान, भक्ति, गणेश उत्सव, नवरात्रि, स्वतंत्रता दिवस, दिवाली, दशहरा, शिवरात्रि, होली, जन्माष्टमी, संक्रांति, तीज, हनुमान चालीसा, सामूहिक हवन आदि

धार्मिक एवं सामाजिक अभियानों का संचालन केंद्र बने मंदिरः क्या और कैसे?

- **सामाजिक लाभः** क्रृषि, सरकारी योजनाएँ, सरकारी लाभ, छात्रवृत्ति योजनाएँ।
- **व्यक्तिगत आशीर्वादः** जन्मदिन, वर्षगांठ, सफलता और त्योहारों पर आस-पास के लोगों को प्रसाद और फूल भेजना।
- **अवसर निर्माताः** निकटवर्ती दैनिक सेवा प्रदान करने वाला धोबी, इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, माली, सफाईकर्मी, मोची, बढ़ई आदि के नाम सूची मंदिर में प्रदर्शित करें।
- **बाजार अवसरः** सब्जी, फल, फूल, प्रसादम, पूजा सामग्री और अन्य दैनिक उपयोग की दुकानों / विक्रेताओं के लिए कम लागत पर स्थान बनाना।
- **साधन सम्पन्न मंदिरः** अन्नशाला, गौशाला, मल्लशाला, पाठशाला, आरोग्यशाला, शास्त्रशाला
- **देवालय संबंध नेटवर्कः** अस्पताल, मेडिकल, खाद्यान्न, कोचिंग, स्कूल, कॉलेज, पाठ्यपुस्तक
- **सामाजिक प्रभावकः** विषय विशेष बातचीत, पार्टी लाइन के पार राजनीतिक समर्थन, सभी स्थानीय एनजीओ के साथ नेटवर्किंग, कैरियर संबंधी, नौकरी संबंधी

श्री अरविंदो सम्मान २०२६

नाम नहीं, काम को सम्मान



राष्ट्र निर्माण, में निःस्वार्थ भाव से योगदान देने वाले किसी भी सनातनी को पुरस्कार के लिए नामांकित किया जा सकता है। नामांकन कर्ता को अपने नामांकन को उचित ठहराने के लिए नामांकन के कारण और उद्देश्य का उल्लेख आवश्यक रूप से करना होगा। चयनित व्यक्ति आयोजन समिति के साथ अपनी सभी जानकारी साझा करेंगे और नामांकित व्यक्ति द्वारा किए गए प्रयासों के संबंध में प्रेस और मीडिया कवरेज की कटिंग, तस्वीर और पुरस्कार संलग्न करेंगे। सम्मान के लिए चयन निम्न श्रेणियों के अंतर्गत किया जाता है: नामांकित व्यक्ति या संगठन को भारतीय धर्म और संस्कृति का अनुयायी होना चाहिए।

- प्रकृति की समृद्धि: संरक्षण, संवर्धन, शैक्षिक सक्रियता
- धर्म का पालन: गौ सेवा, धर्म रक्षा, ज्ञान, अध्यात्म
- समाज की सेवा: सेवा, शिक्षा, संस्कार, स्वरोजगार
- संस्कृति का संरक्षण: कला और संगीत, योग और साधना, साहित्य

शाश्वत पवन सम्मान २०२६

सेवा कार्य ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग



शाश्वत पवन सम्मान, शाश्वत हिंदू प्रतिष्ठान द्वारा दिया जाने वाला एक पुरस्कार है जो संगठन के चिंतन के प्रति आस्था, समर्पण के साथ सक्रिय कर्मयोद्धाओं को दिया जाता है ऐसे कार्यकर्ता जिन्होंने संगठन के मूल विचारों को पल्लवित, पुष्पित, प्रचार-प्रसार, कार्यान्वयन और स्थापन में उल्लेखनीय योगदान देते हैं।

मूलभूत मानदंड:

- आप अपनी रुचि के आधार पर एडमिन से अनुरोध करके ग्रुप बदल सकते हैं।
- आप अपना राज्य/शहर बदलना चाहते हैं, तो एडमिन से अनुरोध संपर्क करें।
हमारे अधिकार और हमारी जिम्मेदारियाँ: व्हाट्सएप ग्रुप

• अनुमति:

- i. गतिविधियाँ, सूचना, समाचार केवल संगठनात्मक विषय के संदर्भ में
- ii. संगठनात्मक - संदेश, निर्देश, सूचना, चर्चा, समाचार, समन्वय और सहयोग।
- iii. भारत भूमि और हिंदू समाज के लिए महत्वपूर्ण संदेश हेतु संगठन के फेसबुक ग्रुप (www.facebook.com/shashwatdevalay) का उपयोग करें (मासिक पहुँच 1 लाख से अधिक है)

• निषेध:

- i. तीसरे पक्ष के फॉर्मर्ड संदेश, छवि या वीडियो निषेध है।
- ii. भ्रामक, नकली, झूठी - जानकारी फैलाना
- iii. राष्ट्रविरोधी, समाजविरोधी और राजनीतिक पोस्ट प्रतिबंधित हैं।

• बुनियादी नैतिकता और अनुशासन:

- i. केवल संगठनात्मक विषय के संदर्भ में चर्चा एवं सुझाव।
- ii. किसी भी अवांछित बहस, सुझाव, अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिक्रियाओं के लिए कोई जगह नहीं।
- iii. प्रत्येक सदस्य महत्वपूर्ण है - उचित भाषा और दूसरों के प्रति सम्मान अनिवार्य है।

• वाद-विवाद निवारण:

- i. यदि आपको किसी अन्य सदस्य से कोई समस्या है, तो कृपया एडमिन से संपर्क करें।
- ii. बार-बार नियमों का उल्लंघन करने पर आपको ग्रुप से निकाल दिया जाएगा।
- iii. एडमिन से अनुरोध कर आप फिर से सम्मिलित होने का अधिकार भी है।
- iv. एडमिन को ग्रुप की स्थिति बदलने का अधिकार है।
- v. बिना कोई कारण बताए किसी को भी व्यक्ति को जोड़ने या हटाने का अधिकार ऐडमिन स्वतः के पास सुरक्षित रखता है।

न्यासः शाश्वत हिंदू प्रतिष्ठान

न्यास अध्यक्ष एवं न्यास समिति

• संगठनः शाश्वत हिंदू •

- मार्गदर्शक
- सलाहकार
- संरक्षक
- पालक

संगठन कार्यकारिणी संरचना

राष्ट्रीय अध्यक्ष

- उपाध्यक्ष (७)
- महामंत्री (१)
- संगठन मंत्री (१)
- मंत्री (११)
- महिला प्रमुख (१)
- प्रकल्प – संयोजक (१)
- कार्यालय मंत्री (१)
- कोषाध्यक्ष (१)
- समन्वयक (५)

प्रांत अध्यक्ष

- उपाध्यक्ष (७)
- महामंत्री (१)
- संगठन मंत्री (१)
- मंत्री (११)
- महिला प्रमुख (१)
- कोषाध्यक्ष (१)
- कार्यालय मंत्री (१)
- जिला संयोजक
- शाश्वत देवालय संयोजक
- समन्वयक

- राष्ट्रीय कार्यकारिणी गठन अखिल राष्ट्र स्तर पर एवं प्रांत कार्यकारिणी का गठन प्रान्त स्तर पर किया जाना चाहिये।
- हर कार्य के लिए पद और हर पद के लिए कार्य है। कार्य सिद्धि के लिये पद बनाये गए हैं, अतः किसी भी व्यक्ति के मानसिक संतुष्टि के लिये कोई भी पद न दिया जाये।
- किसी भी नियुक्ति (अखिल भारतीय एवं प्रांत मुख्य दायित्व) के विषय में विचार विमर्श न्यासियों द्वारा प्रमाणित करवाना अनिवार्य होगा।
- न्यास इस विषय में संगठन मंत्री (अखिल भारतीय एवं संबंधित प्रांत) का मत निर्णय प्रक्रिया के लिये महत्वपूर्ण मानेंगे।

अध्यक्ष	1	<p>अध्यक्ष कार्यकारिणी के प्रमुख होंगे और उनकी भूमिका एक कुटुम्ब के परिपेक्ष में देखा जाये तो एक पिता की भूमिका में रहेंगे। अध्यक्ष एक कुटुम्ब प्रमुख की भूमिका निभायेंगे।</p> <p>भूमिका:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. बाहरी संपर्क (राजनीतिक, प्रशासनिक, संघ, अन्य सामाजिक संगठन, महिला संगठन, मठ मंदिरों से सम्पर्क, शैक्षणिक संस्थाओं से सम्पर्क) 2. संगठन का चेहरा 3. बाहर संगठन का प्रतिनिधित्व 4. संगठन की बैठकों / कार्यक्रमों की अध्यक्षता करना 5. महत्वपूर्ण निर्णयों में प्रमुख भूमिका 6. अनुशासन की प्रमुख भूमिका 7. अनुभावी एवं समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हो 8. आयु में वरिष्ठ हो 9. व्यापक सम्पर्कवाले हो <p>संगठन के रक्षक, पोषक और शिक्षक की जिम्मेदारी अध्यक्ष की होगी। अध्यक्ष के इन विविध कार्यों में उनके सहायक के रूप में उपाध्यक्ष कार्यगत रहेंगे जैसे एक संयुक्त कुटुम्ब में बड़े भाई जो कर्ता के भूमिका में होते हैं तो उनके अन्य भाई उनके सहयोगी और सहायक की भूमिका निभाते हैं।</p>
उपाध्यक्ष	4	<p>उपाध्यक्ष का हस्तक्षेप कार्यकारी एवं नीति की विषयाओं में सिर्फ सलाहकार की होती है। महामंत्री, संगठन मंत्री एवं अध्यक्ष को कार्यकारी एवं नीति के विषयों सुझाव एवं निगरानी का अधिकार। संगठन उपयोगी नए सम्पर्क तक पहुंचना और संगठन से जोड़ना मुख्य कार्य। उपाध्यक्ष जी का कार्य उबाही क्षेत्रों में संपर्क:</p> <ul style="list-style-type: none"> i. राजनीतिक ii. प्रशासनिक iii. संघ एवं अनुशांगिक संगठन iv. संघेतर हिन्दू एवं सामाजिक संगठन v. महिला उपाध्यक्ष - महिला संगठन vi. मठ-मंदिर vii. शैक्षणिक संस्था vi. मठ-मंदिर vii. शैक्षणिक संस्था

महामंत्री	1	<p>महामंत्री की भूमिका जीतनी बाहरी है उतनी ही संगठन के भीतर की भी होती है। कुटुम्ब के परिषेक्ष्य में महामंत्री बड़े बेटे की भूमिका में काम करते हैं जैसे सबसे बड़ा बेटा अपनर पिता का हाथ भी बँटाता है और पतवार के अंदर के विषयों में भी अपना सहयोग देता है।</p> <ul style="list-style-type: none"> i. अध्यक्ष और उपाध्यक्षों के साथ बाहरी संपर्क ii. अध्यक्ष के साथ संगठन का प्रतिनिधित्व iii. संगठन के कार्यक्रम करवाना iv. अध्यक्ष एवं संगठन मंत्री से विचार विमर्श करके बैठकों/कार्यक्रमों में अपेक्षित कार्यकर्ताओं की सूची निश्चित करना v. कार्यकर्ता निर्माण की दृष्टि से नए लोगों को संगठन से जोड़ना vi. संगठन की बैठकों/कार्यक्रमों का वृत्त बनाकर सभी सदस्यों को अवगत कराना vii. घर के बड़े बेटे की भाँति माता, पिता का सहयोग करते हुए निर्णय प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना और समय आने पर परिवार के सभी सदस्यों में समन्वय बनाये रखना viii. कार्यक्रमों की पूर्व योजना और पूर्ण योजना की क्षमता रखनेवाला व्यक्ति ix. कार्यक्रमों के माध्यम से संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति हो इसकी सदैव चिंता करनेवाला व्यक्ति x. स्वयं सक्रिय रहकर कार्यकर्ताओं को भी सक्रिय रखनेवाला व्यक्ति xi. व्यवहारकुशल, समयदानी, तुलनात्मक तरुण, उत्साही, कार्यसमर्पित एवं प्रवास करनेवाला व्यक्ति <p>आदर्श आचरण और अनुशासित जीवन से सबको प्रेरित करनेवाला, अपने ज्ञान और सोच से सबको प्रभावित करनेवाला और अनुकरणीय एवं आदर्श चेहरे के रूप में संगठन की प्रतिमा समाज में सजानेवाला व्यक्ति योग्य महामंत्री हो सकता है।</p>
संगठन मंत्री	1	<p>संगठन मंत्री किसी भी संगठन के संस्कारों और ऊर्जा का स्रोत होता है। सामान्यतः संगठन मंत्री पूर्णकालिक हो यह आवश्यकता है किंतु कई बार आजकल यह ध्यान में आ रहा है कि संघेतर संगठनों को पूर्णकालिक कार्यकर्ता मिलना अपने शुरूआती काल में कठिन होता है। अतः कई संगठन अंशकालिक कार्यकर्ताओं को भी यह दायित्व देने पर विवश हो जाते हैं।</p> <p>जैसे हमने अध्यक्ष की भूमिका को मुख्यतः बाह्य कहा और महामंत्री की भूमिका को बाह्य से संगठन के भीतर की बताया वैसे संगठन मंत्री की भूमिका मुख्यतः संगठन के अन्दर अधिक महत्वपूर्ण है।</p> <ul style="list-style-type: none"> i. ममता का रूप ii. अनुशासन और संस्कार देनेवाला व्यक्ति iii. स्वयं का आचरण बिलकुल शुद्ध रहे iv. अन्य सभी कार्यकर्ताओं के लिये एक आदर्श जीवनशैली की मूर्ती v. सभी कार्यकर्ताओं से बराबर का स्नेह रखनेवाला

- vi. अनुशासन की बात आनेपर कठोरता से निर्णय लेनेवाला
- vii. सदैव संगठन के हित के अतिरिक्त अन्य किसी भी बात से प्रभावित न होते हुए निर्णय लेनेवाला
- viii. संगठन वृद्धि और सशक्तिकरण की चिंता करनेवाला
- ix. उद्देश्यपूर्ति का ध्येय आँखों के सामने रखकर चलनेवाला
- x. सभी कार्यकर्ताओं से और उनके परिवारजनों से संपर्क में रहनेवाला
- xi. समाज में अपने स्वयं के आदर्श जीवनशैली से संगठन को प्रतिभावान और समाज के लिये आकर्षण कांक्रें बनानेवाला
- xii. संगठन के उद्देश्यों को छोड़कर अन्य किसी भी विषय में काम न करनेवाला (उदाहरणार्थ - राजनीति, व्यापार आदि)
- xiii. संगठन को सदैव शुद्ध रखनेवाला
- xiv. सहज और सरल स्वभाव का व्यक्ति
- xv. सभी से सहजता से मिलनेवाला
- xvi. संगठन हित सर्वोपरि माननेवाला
- xvii. मीत भाषी, मितव्यवी, पूर्ण समयदानी, सीमित अवश्यकताओं वाला व्यक्ति

संगठन मंत्री स्वयं की प्रसिद्धि से पराङ्गुख हो किन्तु जहाँ आवश्यक हो वहाँ संगठन का प्रतिनिधित्व करने वाला होना चाहिये। जब आवश्यकता हो तभी मंच की अभिलाषा हो अन्यथा अध्यक्ष और महामंत्री द्वारा मंच की शोभा बढ़े इसका आग्रही होना चाहिये। सभी की बात और सभी के मत सुनने और समझने की क्षमता होनी चाहिए किन्तु निर्णय लेते समय संगठन हित सर्वोपरि के मंत्र से अटल रहना चाहिये।

अध्यक्ष और महामंत्री के साथ संगठन के सभी विषयों पर चर्चा और विचार विमर्श करते हुए निर्णय प्रक्रिया को गति देने की दृढ़ इच्छा एवं क्षमता संगठन मंत्री में होनी चाहिये।

इसीके साथ अध्यक्ष और महामंत्री का भी यह दायित्व बनता है कि संगठन मंत्री का मत लिये बिना कोई भी निर्णय न ले। संगठन मंत्री संगठन के सशक्त और अशक्त विभागों की समझ सामान्यतः सबसे अधिक रखता है अतः उसका मत आवश्यक है। दूसरी बात यह है कि सामान्यतः पूर्णकालिक होने के कारण संगठन मंत्री सदैव संगठन के बारे में ही चिंता करता है क्योंकि उसके जीवन में संगठन के अतिरिक्त कोई काम नहीं होता।

यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिये कि हमने संगठन मंत्री को संगठन की माँ का स्थान दिया है। जितना स्नेह और ममता माँ में होती है विपरीत समय आनेपर या परिवार के सदस्य पर आँच आनेपर यही ममता की मूर्ति दुर्गा और काली का रूप भी धारण करती है। संगठन मंत्री एक नारिकेल फल की तरह होता है – ऊपर से सख्त और भीतर से मूढ़ और मीठा।

कोषाध्यक्ष	1	संगठन के कोष का हिसाब किताब रखना, आय व्यय का हिसाब रखना, बैंक खातों पर नियंत्रण रखना, कोष वृद्धि की नीतियाँ बनाना
कार्यालय मंत्री	1	कार्यालय की देखभाल, पत्राचार करना, सूचनाएँ भेजना, बैठकों की व्यवस्था करना, संगठन की सामग्री को संभलकर रखना और आवश्यकतानुसार उपलब्ध करवाना और यह सामग्री वापस कार्यालय में आये इसकी चिंता करना, प्रवासी कार्यकर्ता की निवास, भोजन व्यवस्था की चिंता करना, सभी कागज आदि फाइलों में संभलकर रखना, कार्यक्रमों के वृत्त बनाना।
मंत्री	11	महामन्त्री के साथ उनके कामों में हाथ बँटाना यह मुख्य दायित्व है।
प्रकल्प संयोजक	1	<ul style="list-style-type: none"> एक व्यापक भूमिका अध्यक्ष, महामंत्री और संगठन मंत्री की जिम्मेदारियाँ निभाना नई इकाइयाँ खड़ी करना और विद्यमान इकाइयों को सक्रिय रखना नए-नए उपक्रमों का विचार करते हुए उन्हें अपने कार्यक्षेत्र की इकाइयों में कार्यान्वित करना प्रत्येक इकाइ में कार्यकारिणी का गठन, कार्यक्रम, कार्यालय, कोष और कार्यकर्ता का निर्माण करना निरंतर प्रवास से अपने कार्यक्षेत्र की इकाइयों में ऊर्जा भरना



Notes:

Notes:

Notes:

उत्सव का आनंद, मंदिर के संग

- हवन •
- अभिषेक •
- वेद-पुराण ज्ञान •
- होली-दिवाली मिलन •
- जन्माष्टमी •
- रामनवमी •
- हनुमान जयंती •

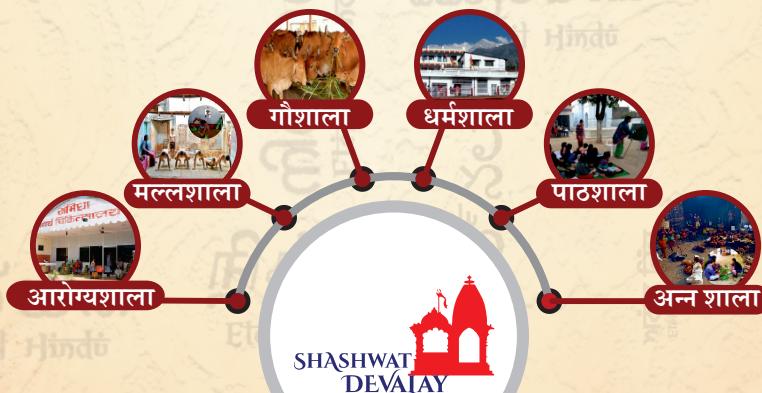
व्यक्तिगत एवं
पारिवारिक
उल्लासः

- जन्मदिवस
- सगाई विवाह
- वैवाहिक वर्षगांठ
- अन्य संस्कार
- स्वतंत्रता दिवस
- गणतंत्र दिवस
- मकर संक्रांति

जीवन का आनंद, मंदिर के संग

भारतीय समाज का मूलाधार मंदिर

धार्मिक-सामाजिक कार्यों का संचालन करे मंदिर



जीवन का आनंद, मंदिर के संग

श्रेष्ठ समर्पण, मंदिर में समय का अर्पण

हमारा मंदिर, हमारी पहचान

आपका काम, मंदिर के नाम

राष्ट्र निर्माण के काम, एक घंटे मंदिर के नाम

उत्सव का आनंद मंदिर के संग

भारतीय समाज का मूलाधार मंदिर

स्वविलंबी मंदिर, स्वविलंबी हम

धार्मिक सामाजिक कार्यों का संघालन करे मंदिर

Join Us



SHASHWAT
DEVALAY

Shashwat Hindu Pratishtan | शाश्वत हिंदू प्रतिष्ठान



Support Us



Delhi: MG House, A - 86, Okhla Industrial Estate Phase - II, New Delhi - 110020

🌐 www.shashwathhindu.com 📩 info@shashwathhindu.com ☎ +91 86571 44149 / 8657144169